अन्नदाता ही सर्वश्रेष्ठ
(कृषि मौसम)

हरि शंकर पाण्डेय

hsp1969@yahoo.co.in

मौसम विज्ञान केंद्र - भोपाल (मध्य प्रदेश)

अखिल भारतीय अंतर विभागीय/ अंतर मंत्रालय हिंदी संगोष्ठी, शिलांग दि. ०४-०५ दिसम्बर २०१७

अंतर्वस्तु (Content)

1. प्रस्तावना ।
2. भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषतायें ।
3. कृषि एवं किसानों की समस्याएं |
4. किसानो के लिए योजनाएँ |
5. भारतीय किसान की एवं उसका महत्त्व ।
6. उपसंहार ।

प्रस्तावना

- भारत एक कृषि प्रधान देश है । यहां की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि ही है । कृषि कर्म ही जिनके जीवन का आधार हो, वह अन्नदाता कृषक है। कृषि प्रधान देश होने के कारण हमारे देश की अर्थव्यवस्था का लगभग समूचा भार भारतीय किसान के कन्धों पर ही है ।
- चूंकि हमारे देश की अधिकांश जनता गांवों में निवास करती है, अत: भारतीय किसान ग्रामीण वातावरण में ही रहकर विषमताओं से जूझते हुए अपने कर्म में नि:स्वार्थ भाव से लगा रहता है । इस अर्थ में भारतीय किसान का समूचा जीवन उसके अपूर्व त्याग, तपस्या, परिश्रम, ईमानदारी, लगन व कर्तव्यनिष्ठा की अद्भुत मिसाल है ।

- ❖ अधिकांश लोग आज भी अपनी जीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं।
- ❖ दूसरे शब्दों में हमारी अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही है।

- ❖ भारत एक कृषि प्रधान देश है।
- ❖ 70% भारतीय लोग किसान हैं।
- ❖ किसान भारत देश के रीढ़ की हड्डी के समान है।
- ❖ देश के राष्ट्रिय आय का 28% कृषि से प्राप्त होता है।

भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषतायें -

- भारतीय कृषि का अधिकांश भाग सिचाई के लिए मानसून पर निर्भर करता है।
- भारतीय कृषि की महत्त्वपूर्ण विशेषता जोत इकाइयों की अधिकता एवं उनके आकार का कम होना है।
- भारतीय कृषि में जोत के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल खण्डों में विभक्त है तथा सभी खण्ड दूरी पर स्थित हैं।
- भूमि पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जनसंख्या का अधिक भार है।
- कृषि उत्पादन मुख्य तया प्रकृति पर निर्भर रहता है।
- भारतीय कृषक ग़रीबी के कारण खेती में पूँजी निवेश कम करता है।
- खाद्यान्न उत्पादन को प्राथमिकता दी जाती है।
- कृषि को जीविकोपार्जन का साधन माना जाता है।
- भारतीय कृषि में अधिकांश कृषि कार्य पशुओं पर निर्भर करता है।

वर्त्तमान में कृषि एवं किसानों की समस्याएं |

1. कृषि शिक्षा

- ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का अभाव है | देश में कृषि शिक्षा विश्वविद्यालय नाम मात्र के हैं, उनमें भी गुणवत्तापरक शिक्षा का अभाव है |
- कृषि शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों में होना चाहिए।

2. भूमि प्रबंधन

- आजादी के बाद भी किसी प्रकार की भूमि एवं फसल प्रबंधन की बात देश के किसी कोने में दिखाई नहीं देती और तदर्थ आधार पर नीतियों और प्रबंधन का संचालन वे लोग करते हैं, जिन्हें इस क्षेत्र की कोई जानकारी नहीं होती।
- राष्ट्रीय स्तर पर यह नीति बनाई जाए कि देश के अंदर विभिन्न जिंसों की कितनी खपत है और वह किस क्षेत्र में है ।

3. भूमि अधिग्रहण नीति

- विभिन्न विकास प्राधिकरणों द्वारा भूमि अधिग्रहण की नीति में कृषि योग्य भूमि के मद्देनजर परिवर्तन किया जाना परमावश्यक है।
- औद्योगिक विकास, आधारभूत संरचना विकास व आवासीय योजनाओं हेतु ऐसी भूमि का अधिकरण किया जाना चाहिए जो कृषि योग्य नहीं है।
- कृषि उपयोग में लाए जाने वाली भूमि का अधिग्रहण और उस पर निर्माण प्रतिबंधित कर देना चाहिए।

4. क्रय-विक्रय व्यवस्था

- क्रय-विक्रय व्यवस्था को मजबूत और पारदर्शी बनाया जाना चाहिए और उसके उत्पाद का मूल्य भी मांग, पूर्ति और लागत के आधार पर किसान को निर्धारित कर लेने देना चाहिए।
- सर्वविदित है कि किसानों का कहीं उत्पाद इतना अच्छा और अधिक हो जाता है कि सड़ने लगता है और किसान उसे फेंकने को मजबूर हो जाता है और कभी-कभी उत्पाद इतना कम होता है कि उसे मध्यस्थ सस्ती दरों पर क्रय कर उच्च दरों पर बिक्री कर बीच का मुनाफा ले लेता है और किसान ठगा-सा रह जाता है।

5. कृषि आधारित उद्योग-धंधे

- ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित ऐसे उद्योग-धंधों की स्थापना की जानी चाहिए जिनमें न्यूनतम प्रशिक्षण से स्थानीय आबादी के व्यक्तियों को रोजगार मिल सके तथा किसानों के उत्पाद की उसमें खपत हो सके।
- ग्रामीण बेरोजगारों को ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराने के लिए वहां के स्थानीय उत्पाद को ध्यान में रखते हुए लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना भी की जानी चाहिए।

6.ऋण योजनाएं

- व्यावसायिक बैंकों द्वारा अपनी ऋण नीतियां इस प्रकार नहीं बनाई गई थी जिससे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्रों को पर्याप्त ऋण सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। अतः इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु इन क्षेत्रों में ग्रामीण बैंकों की स्थापना आवश्यक थी। इनकी ऋण नीतियां एवं ऋण योजनाएं निम्न हैं—
  - लघु एवं सीमांत कृषकों एवं कृषि श्रमिकों को ऋण।
  - ग्रामीण कारीगरों एवं लघु व्यवसायी को ऋण।

7. मूलभूत सुविधा जैसे बिजली ,पानी का न होना |
8. शहरीकरण |
9. ग्लोबल वार्मिंग |
10. विकराल प्राकृतिक आपदायें |
11. सहायक रोजगार जैसे मूलभूत सुविधाओं का आभाव |

सरकारी
योजना

केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा किसानों के लिए योजनाएँ |

- प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना |
- प्रधान मंत्री कृषि सिचाई योजना |
- राष्ट्रीय ई-कृषि बाजार योजना |
- मोबाइल ऐप्प हेल्प योजना |
- कृषि मौसम सेवा |
- ग्रामीण भण्डारण योजना |

प्रधानमंत्री
फसल बीमा योजना

न्यूनतम प्रीमियम, किसान कल्याण के लिए अधिकतम बीमा

सभी फसलों का संरक्षण

चावल, गेंहूँ, मक्का, गन्ना, दाल, इत्यादि

#TransformingIndia
राष्ट्रीय कृषि बाजार
eNAM
किसानों को उपज का सही मूल्य दिलाने हेतु मोदी सरकार ने 'राष्ट्रीय कृषि बाजार' स्कीम की शुरुआत की।
12 राज्यों / संघ राज्य क्षेत्रों में 365 प्रस्तावित मंडियों में हार्डवेयर लगवाने तथा सॉफ्टवेयर इत्यादि के भुगतान करने के लिए रु. 159.42 करोड़ जारी।
अभी तक 17 राज्यों एवं संघ शासित राज्यों ने अपने मंडी क़ानूनों में परिवर्तन कर लिया है।
14 अप्रैल, 2016 - इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल का निर्माण / होस्टिंग एवं पायलट 21 मंडियों की शुरुआत।
30 सितम्बर, 2016 तक 200 मंडियों में सॉफ्टवेयर का उपयोग आरंभ करना।
31 मार्च, 2017 तक अतिरिक्त 200 मंडियों में सॉफ्टवेयर का उपयोग आरंभ करना।
31 मार्च, 2018 तक शेष 185 मंडियों में सॉफ्टवेयर का उपयोग आरंभ करना अर्थात सभी 585 मंडियों में क्रियान्वयन पूर्ण।

अन्न बचायें, खुशहाली लायें

कटाई के बाद फसल को बरबाद होने से रोकने, उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने, आयु बढ़ाने और किसानों द्वारा मजबूरन कम मूल्य पर अनाज बेचने से रोकनें के लिए वैज्ञानिक भण्डारण अपनायें। ग्रामीण भण्डारण योजना के अन्तर्गत गोदामों के निर्माण के लिए विभिन्न श्रेणी के उद्यमियों(किसान से संस्थाओं तक) को गोदामों के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है। आईये हम मिलकर ग्रामीण विकास व समृद्धि के मार्ग पर साथ बढ़ें।

ग्रामीण भण्डारण योजना

किसानों के लिए एक वरदान

कृषि भण्डारण क्षमता बढ़ायें, आकर्षक दरों पर अनुदान पायें

योजना की विशेषताएँ :-

- ऋण सम्बन्धित अनुदान : 15 से 33.33% की दर पर व ₹ 1.35 से 3.33 करोड़ की अधिकतम सीमा तक

अनुदान के पात्र उद्यमियों की श्रेणियाँ :-

- व्यक्ति /किसान /किसान समूह /स्वंय सेवा समूह /एन जी ओ /सहकारी समितियां
- फर्म/कम्पनियाँ /निगम /भण्डारण निगम।

गोदाम का आकार

- 30,000 मैट्रिक टन तक (उत्तर पूर्वी राज्यों, सिक्किम तथा पहाड़ी क्षेत्रों में 25,000 मैट्रिक टन तक)

परियोजना के लाभ हेतु कहां सम्पर्क करें

- सहकारी समितियां-राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम में आवेदन करें
- अन्य सभी व्यसायिक बैंकों से सम्पर्क करें

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :
विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय (DMI)
दूरभाष : 0129-2434348 ई-मेल : rgs-agri@nic.in
राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD)
दूरभाष :022-26539350 ई-मेल : icd@nabard.org
राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC)
दूरभाष :011-26565170 ई-मेल : nksuri@ncdc.in

सत्यमेव जयते
कृषि एवं सहकारिता विभाग
कृषि मंत्रालय
भारत सरकार

अधिक विवरण हेतु कृपया www.agricoop.nic.in अथवा www.agmarknet.nic.in देखें।

PRADHAN MANTRI KRISHI SINCHAI YOJANA
Farmers' Welfare
Rs. 50 thousand crore to be spent in five years to bring 140 lakh hectares additional area under irrigation
Har Khet ko Pani
To bring 28.5 Lakh hectare area under irrigation during the year 2016-2017
Rs. 12,517 crore to be incurred on 23 irrigation schemes in 2016-17
#TransformingIndia
More crop per drop

अपने क्षेत्र की
जाने मौसम की हाल

किसान सुविधा ऐप्प

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

एक बटन दबाकर किसान को मिल जायेगी प्रचंड तूफ़ान की जानकारी भारी बारिश से लेकर, आंधी तूफ़ान तक सबकुछ की जानकारी देता है यह ऐप्प

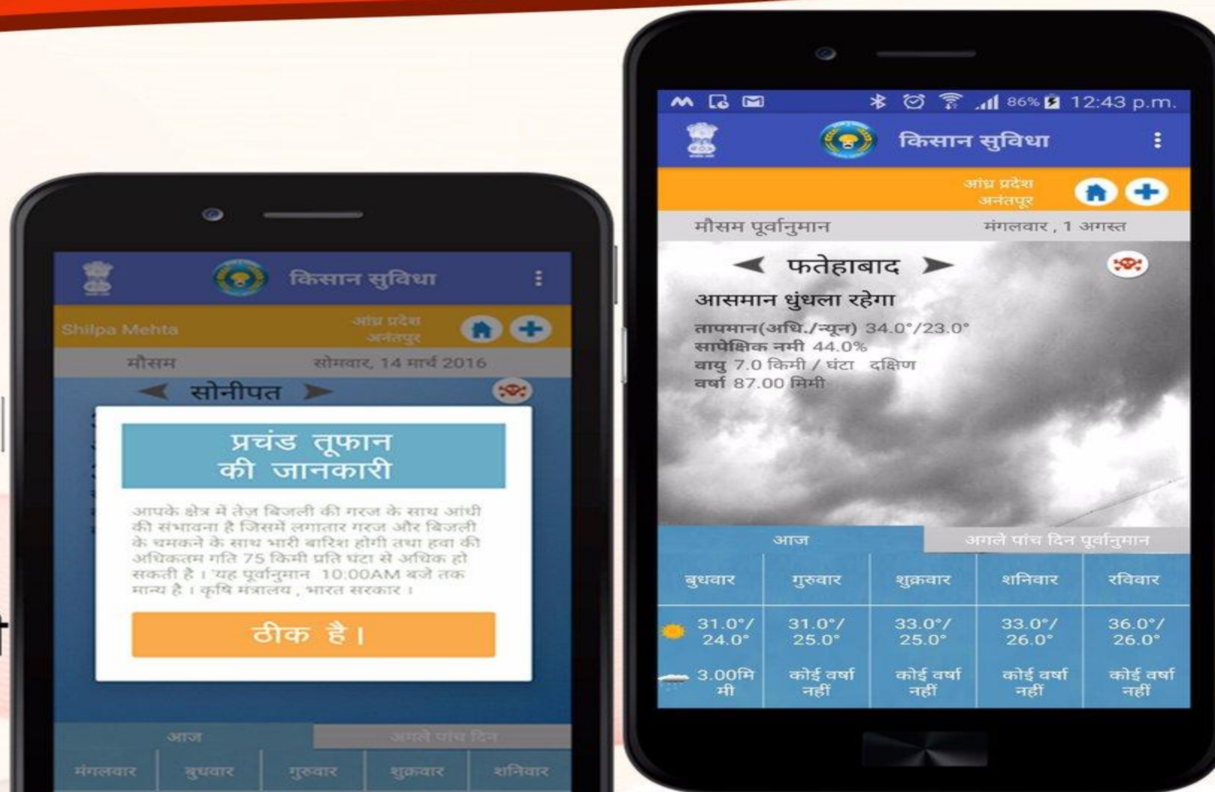

"किसान सुविधा ऐप्प" का लाभ उठाने के लिए किसान अपने फोन के गूगल प्ले स्टोर, आईओएस ऐप्प स्टोर या http://mkisan.gov.in से इस ऐप्प को तुरंत डाउनलोड करें।

कृषि मौसम सेवा

- प्रमुख उद्देश्य फसल पर प्रतिकूल मौसम के प्रभाव को कम करना है तथा कृषि उत्पादन बढाने में फसल-मौसम संबंधों का उपयोग करना है ।
- कृषि मौसम विज्ञानी सेवा कार्यक्रम का कृषि उत्पादन पर सीधा असर पड़ता है।
- ये सेवाएं 550 जिलों में उपलब्ध हैं।
- किसानों को खेती के विभिन्न चरणों से पूर्व परामर्श सूचनाएं मिलती हैं।
- वर्तमानमें, लगभग 25 लाख किसान मोबाइल के माध्यम से इस सूचना का उपयोग कर रहे हैं।

कृषि मौसम सेवा

1. मौसम की घटनाओं का पूर्वानुमान खेत के उपयुक्त नियोजन के लिए मदद करता है।
2. बोनी के संचालन को शुरू करने या रोकना में मदद करता है
3. खेत के संचालन में निम्नलिखित मदद करता है:
   - फसल को सिंचाई करना है या नहीं
   - जब उर्वरक लागू किया जाए या नहीं
   - क्या पूरा फसल शुरू करना है या इसे रोकना है
4. ठंढ से लड़ने के लिए उपाय करने में मदद करता है
5. परिवहन और अनाज के भंडारण में मदद करता है।
6. पशुओं को बचाने के उपायों में मदद करता है

कृषि में मौसम विज्ञान के महत्व और क्षेत्र

1. कृषि जलवायु की विशेषता
2. उत्पादन में स्थिरता के लिए फसल योजना
3. फसल प्रबंधन
4. फसल मॉनिटरिंग
5. फसल मॉडलिंग और उपज-चक्कर संबंध
6. फसल-चक्कर संबंध में अनुसंधान
7. जलवायु extremities
8. मिट्टी के नमी तनाव का निदान करने के लिए एक उपकरण के रूप में जलवायु
9. पशुधन उत्पादन
10. मृदा गठन

उपसंहार

- देश की प्रगति एवं विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाहने वाला अन्नदाता भारतीय किसान अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार स्तम्भ है ।

- उसकी मेहनतकश जिन्दगी को सारा देश नमन करता है।

- सच कहा जाये, तो भारतीय किसान एक महान् किसान है, महान् इंसान है ।

“ उत्तम खेती मध्यमवान ,
निषिध चाकरी भीख निदान”